हिंदी उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता विमर्श

प्रो.जयवंत मधुकर बाबर
डॉ.डी.वाय.पाटील कला,वाणिज्य
तथा विज्ञान महाविद्यालय,पिंपरी पुणे -४११०१८ महाराष्ट्र

शोध-निबंध का सार –

उत्तर आधुनिकता पर पाश्च्यात्य देशों का प्रभाव है। इस विचारधारा में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। आज लोग भौतिकवाद के पीछे दौड रहे हैं । वर्तमानकाल में मानवता का ह्रास होकर अमानवता को बढ़ावा मिल रहा है ।लोग उपभोक्ता संस्कृति को अपना रहे हैं। इसका प्रभाव अधिकतर नई पीढी पर निर्माण हो रहा है। आज समाज में यौन संबंधों का खुलापन निर्माण हो रहा है। साथ ही रिश्ते नातों में कृत्रिमता तैयार हो गई है। इससे मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो रही है, जिसे हिंदी उपन्यासकारों ने चित्रित करने का प्रयास किया है।

प्रस्तावना – पोस्ट मॉडर्निज्म एक संकल्पना है। पोस्ट का अर्थ है-एक खास तरह से अंत होने की सूचना देना और मॉडर्निज्म का अर्थ है- नए का स्वीकार करना।पोस्ट मॉडर्निज्म इसका हिंदी अनुवाद उत्तर आधुनिकता है। इसका सबसे पहले प्रयोग सन १९६० ई.में अरनॉल्ड टोयन्बी ने किया है। इसके बाद उत्तर आधुनिकता पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए ।परिणामस्वरूप इसका माहौल उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है । उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता की अगली कड़ी मानी जाती है ।उत्तर आधुनिकता पाश्च्यात्य देशों की उपज है । इस पर मूलत: यूरोप और अमरिका का प्रभाव है। परम्पराओं का विरोध, वैज्ञानिकी आविष्कार, खोज, औद्योगिकीकरण का उत्तरोत्तर बढ़ना, तंत्रज्ञान के क्षेत्र में विकास आदि विचारधाराओं में परिवर्तन ही उत्तर आधुनिकता के परिणाम का फल है। इस सन्दर्भ में डॉ.गीता वर्मा लिखती हैं की "उत्तर आधुनिकता दर्शन, विज्ञान, साहित्य,कला और भाषा से जुड़ गई है । यह विचारधारा वैश्वीकरण से पनपी है, जिसमे पूँजिपति और साम्राज्यवाद के समर्थक उपभोक्ता संस्कृति की स्थापना करना चाहते है। इसमे उपभोक्तावादी विक्षिप्तता के माहौल में मानव जीवन की सारी मान्यताएँ, नैतिक मूल्य जटिलताओं से उलझकर उलट-पुलट गए है। साथ ही वैश्वीकरण के मायाजाल में फँसकर नैतिक मूल्यों को त्यागकर लोग भौतिकवाद के पीछे दौड लगा रहे है, जिसमे अमानवीयता को बढ़ावा मिलकर मानवता का ह्रास हो रहा है।"[१] आज यह विषय चिंतन का विषय बन गया है।यह प्रवृत्ति काफी रफ़्तार के साथ आगे बढ़ रही है।उत्तर आधुनिकतावादी विद्वान प्राचीन काल से लेकर आज तक के ज्ञानों और विज्ञानों को खंड-खंड करके विश्लेषण कर रहे है। जिस पर हिंदी उपन्यासकारों ने लेखनी चलाई है ।

शोध निबंध -उत्तर आधुनिकता की प्रमुख प्रवृत्ति उपभोक्तावादी संस्कृति है ।वर्तमानकाल में उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने सम्पूर्ण विश्व को बाजार की शक्ल प्रदान की है है पूँजीवादी रहन-सहन को अपनाने की जो खुली छूट मनुष्य को मिल रही है ।उससे उपभोक्तावादी आकांक्षा की प्रवृत्ति पनप रही है । उपभोक्तावादी संस्कृति के परिणामस्वरूप समाज में कामुकता, विलासिनता, विक्षिप्तता एवं अश्लीलता का निर्विरोध प्रवेश हो रहा है । इस प्रकार की प्रवृत्ति उत्तर आधुनिकता की उपज है। उत्तर आधुनिकता से उपभोक्तावादी आकांक्षायें, जीवन जीने की नई कला, नैतिक पतन एवं यौन संबंध के बदलते प्रवाह निर्माण हो रहे है । उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के शिकंजे में फँसकर मनुष्य का जीवन 'वस्तु' में तब्दील हो गया है । वर्त्तमान परिवेश में मनुष्य जीवन के सामने सबसे बड़ा अवरोध है पूँजीवाद से निर्मित उपभोक्तावाद । उत्तर आधुनिकता के दौर में उपभोक्तावाद की सनक नई पीढ़ी में अधिक मात्रा में दिखाई देती है । वैसे देखा जाए तो नई पीढ़ी ख़राब नही है। वह जो देखती है, सुनती है उसी को अपनाती है । उसमें सही-गलत की पहचान नहीं रह गयी है।इस विक्षिप्त उपभोक्तावादी माहौल में मनुष्य अपनी मानवीय संवेदनाएँ एवं स्वाभाविक जीवन को नकारकर बदलते चकाचौंध एवं तकनिकी जटिलताओं में उलझ रहा है । उसे हिंदी उपन्यासकारों ने रेखांकित करने का प्रयास किया है ।

मनोहरश्याम जोशी का हमजाद उपन्यास उपभोक्तावादी संस्कृति को दर्शाता है । प्रस्तुत उपन्यास में वैध-अवैध की चिंता किए बिना यौन संबंधों का जितना खुलापन मिलता है, उतना अन्य किसी उपन्यास में नहीं मिलता है । उसे देखने के बाद सभ्य समाज को उपन्यास पढ़ पाना असंभव-सा हो जाता है । इसमें टी.के.नामक पात्र की शराब, जुआ और सेक्स उसकी प्राथमिकता रही है। उसने तखतराम के साथ समलैंगिक संबंध रखे थे। वह तखतराम की बहन से भी संबंध रखता है। टी.के.स्नेहबाई,कनक,मैना,रीटा,सरस्वती आदि महिलाओं से संबंध रखता है। वह अनेक लोगों की संपत्ती फँसाकर लेता है। प्रस्तुत उपन्यास का संवाद उपभोक्तावादी संस्कृति को दर्शाता है। "इतना नीचे मत गिर, वह तेरी बेटी और डोत्री दोन्हों है। वह हँसा और मेरी जाँघो पर हात मारकर बोला, मेरी बेटी लाते हुए तुझे परहेज होता है तो जा अपनी बेटी ले आ।"[२] इस प्रकार उत्तर आधुनिकता के कारण उपभोक्तावादी संस्कृति सामने आ रही है । सुरेंद्र वर्मा द्वारा लिखित दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता उपन्यास में उपभोक्तावादी संस्कृति को प्रस्तुत किया है । इस उपन्यास में दो यूवकों के माध्यम से दुनियारुपी बाजार का चित्रण हुआ है । प्रस्तुत उपन्यास में दो दोस्त नील और भोला मुंबई में नसीब अजमाने पहुँचते हैं । भोला अंडरवर्ल्ड में अपनी किस्मत आजमाता है और तरक्की भी करता है । वह नाचनेवाली शालू के साथ प्रेम संबंध रखता है । नील धनाढ्य महिलाओं के लिए पुरुष वेश्या बन जाता है। पारुल नील को पाना चाहती है, पर वह पारुल को नकारता है । पारुल के घरवाले मफियावालों के जरिए नील की हत्या करते है । इस प्रकार उपभोक्तावादी प्रवृति से मनुष्य का जीवन दिशाहीन हो गया है ।

उत्तर आधुनिकता की दूसरी प्रवृत्ति विखंडनवाद है । यह प्रवृत्ति समानता की जगह पर विविधता का स्वीकार करती है । यह प्रक्रिया केन्द्रीकरण से विकेंद्रीकरण की ओर जाती है। उत्तर आधुनिकता की यह प्रवृत्ति यूरोप के केंद्र को तोड़कर अपने अनेक नए केंद्र को रचती हुई बहुकेंद्रीय बन रही है । इस उत्तर आधुनिकता प्रवृत्ति के अंतर्गत समाज विखंडित एवं श्रेणीमय बनता है और इस श्रेणी में हर विखंडित समूह अपने आसपास फिर से केंद्र बनता नजर आता है। इस सन्दर्भ में विशाल शुक्ला लिखते है कि, "आधुनिकता में एक ओर महान विचारों को अंकित किया जाता है ।तो दूसरी ओर उत्तर आधुनिकता में यह विचार बिखरने यानी विखंडित होते नजर आते है"। [३] आधुनिकता के अंतर्गत केन्द्रीयता,सार्वभौमत्व एवं केन्द्रीय वर्चस्ववाद को नकारकर विकेंद्रियता एवं स्थानीयता पर बल दिया जाता है ।आधुनिकता पुनर्सृजन का समर्थन करता है तो उत्तर आधुनिकता विखंडन एवं अलग पहचान का समर्थन करता है। जिसे साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में रेखांकित करने का प्रयास किया है ।

मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' उपन्यास विखंडित प्रवृत्ति को दर्शाता है। प्रस्तुत उपन्यास में बंटी नामक एक ऐसे संवेदनशील बालक की कथा अंकित हुई है जो पढ़े-लिखे माँ-बाप की संतान है। माँ-बाप के अतिरिक्त अहं के बीच बंटी जैसा बेगुनाह बच्चा बलि का बकरा बन जाता है। माँ-बाप के प्यार, स्नेह से वंचित वह 'समस्या बालक' बन जाता है। अजय-शकुन के माध्यम से आधुनिक पति-पत्नी के विखंडित जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है, जो अपना अहं स्वाभिमान से एक-दुसरे के सामने झुकना मान्य नही करते। पति-पत्नी का तनाव बच्चों के जीवन में दुःख की स्थिति निर्माण करता है। इस प्रकार खंडित परिवार के बच्चे एबनॉर्मल बनते है।

कमलेश्वर द्वारा लिखित 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में विखंडनवादी प्रवृत्ति को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत उपन्यास में देश-विदेश में पनपी विखंडित प्रवृत्ति से आदमी एक-दूसरे का द्वेष करके अत्याचार कर रहा है। इस विखंडित प्रवृत्ति से हिंसा का निर्माण होकर असंस्कृतियॉ जन्म लेती है। बलूची, बंगाली,सिन्धी,पंजाबी आदि लोग विखंडित प्रवृत्ति को अपनाकर मजहब के नाम पर लड़ रहे है। प्रस्तुत उपन्यास का पात्र अदीब इन लोगों को पागल घोषित करके दुनिया को बचाने की चाह रखता है। वह कहता है, "ऐसे पागल लोग इस दुनिया में नही मिलते ..... अगर मिलते होते तो सोवियत युनियन नही टूटता, युगोस्लाविया में बोस्निया के मुसलमानों का कत्लेआम न होता, सोमालिया में लोग और बच्चे बरसों बरस अकाल से न मरते, और चार -सौ फिलिस्तीनो इसराईल की सरहद पर भूख, ठण्ड और मौत का इन्तजार न कर रहे होते..... उन्हें इसराईली इस तरह मौत के मुँह में न खदेड़ देते"। [४] इसप्रकार उत्तर आधुनिकता के कारण विखंडित प्रवृत्ति पनप रही है।

उत्तर आधुनिकता की तीसरी प्रमुख प्रवृत्ति बहुसंस्कृतिवाद है। आज जनसंचार माध्यम से विश्व एक ग्लोब गाँव में तब्दील हो गया है। इससे देशों की भौगोलिक सीमाओं के साथ-साथ सांस्कृतिक सीमाएँ भी टूट गयी है। परिणामस्वरूप इस सैलाब में बहती आयी, अन्य आयातित संस्कृति का आक्रमण होकर अपनी जड़े जमा ली है एवं स्थापित सार्थक आदर्श, मूल्यवादी संस्कृति को हाशिए पर खड़ा कर दिया है। इस सन्दर्भ में डॉ.सुरेश पवार लिखते है कि, "उत्तर आधुनिकतावाद के दौर में बहुसंस्कृतिवाद का प्रभूत्व निर्माण होकर सामाजिक बदलाव को आगे ले जानेवाली संस्कृति का निरूपण हो गया है"। [५] मानव इस विस्तार पाती वैश्विक संस्कृति में जीवन के हर क्षेत्र में आत्मस्थापन एवं आत्मखंडन के लिए प्रवृत्त हो गया है। आज मानव उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों से हटकर बहुसंस्कृतिवाद से प्रभावित होकर आदर्श सांस्कृतिक मूल्यों का खंडन कर रहा है एवं अपनी आदर्श सांस्कृतिक जड़ों से हटकर विकसित बनने की होड़ में बड़ी छलांग लगाई है। जिससे एक प्रकार का सांस्कृतिक उपद्रव्य सामने आया है। बहुसंस्कृतिवादी के प्रभाव से विकास के भ्रम के पंख लगाये मानव की छलांग उसे कहाँ लेकर नष्ट करेंगी यह भावी काल के गर्त में छुपा है। बहुसंस्कृतिवाद एक तरफ मानव के विकास में योगदान दे रहा है तो दूसरी तरफ मानव को विनाश की कगार पर खड़ा कर रहा है, जिसे साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में रेखांकित किया है।

गीतांजलि श्री का 'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास में बहुसंस्कृतिवाद को दर्शाया है ।प्रस्तुत उपन्यास में प्रो.शरद और प्रो.हनीफ दोन्हों अच्छे मित्र है। वे दोनों धर्म को न मानकर मानवता को महत्त्व देते है। लेकिन वे दोनों विविध धर्मो की बातें करते रहते है। हनीफ कहता है,"यह आधा मुसलमान था, मेरे संग बचा आधा भी रंग गया। मैं आधा हिंदू था, इसके सग सलामत आधा बदल गया। अब बूझो पहेली तो जानें, हममें कौन मुसलमान है, कौन हिंदू?"[६] इस प्रकार दोनों अलग -अलग धर्म के होकर भी एक-दूसरे की विचार संस्कृति अपनाते हैं। इस प्रकार दोनों अलग-

दधनाथ सिंह का 'आखरी कलाम' उपन्यास में भी बहुसंस्कृतिवाद की पैरवी की है। प्रस्तुत उपन्यास में हिंद और मुस्लिम संस्कृती का मिलाफ दिखाया है। लेकिन राजनीतिक लोग सांप्रदायिक विद्वेश फैलाकर इस सांस्कृतिक एकता को धार्मिक कट्टरवाद का रंग चढाकर आम आदमी का जीवन तीतर-बितर कर रहे है।

उषा प्रियंवदा द्वारा लिखित अंतर्वशी उपन्यास में भारतीय और पाश्च्यात्त्य संस्कृति को दर्शाया है। प्रस्तुत उपन्यास की वामा अपनी अतृप्त प्रेम की भूख पति को छोड़कर प्रेमी (राहुल) से बुझाती है। वह प्रेम का खुलकर इजहार करती है। इसप्रकार सांस्कृतिक आक्रमण से उदात्त संस्कृति नष्ट हो रही है और बहुसंस्कृति का अनुकरण मानव को विनाश की ओर ले जा रहा है।

निष्कर्ष :-

अतःस्पष्ट है, कि उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता की अगली कड़ी मानी जाती है। उत्तर आधुनिकता पाश्च्यात्त्य देशों की उपज है। इस पर मूलतः यूरोप और अमरिका का प्रभाव है। परंपराओं का विरोध, वैज्ञानिकी अविष्कार, खोज, औद्योगिकीकरण का उत्तरोत्तर बढ़ाना, तंत्रज्ञान के क्षेत्र में विकास आदि विचारधाराओं में परिवर्तन ही उत्तर आधुनिकता के परिणाम का फल है। उत्तर आधुनिकता दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला और भाषा से जुड़ गई है। यह विचारधारा वैश्वीकरण से पनपी है, जिसमें पूँजीपति और साम्राज्यवाद के समर्थक उपभोक्ता संस्कृति की स्थापना करना चाहते है। इसमें उपभोक्तावादी विक्षिप्तता के माहौल में मानव जीवन की सारी मान्यताएँ, नैतिक मूल्य जटिलताओं से उलझकर उलट-पुलट गए हैं। साथ ही वैश्वीकरण के मायाजाल में फँसकर नैतिक मूल्यों को त्यागकर लोग भौतिकवाद के पीछे दौड रहे है, जिससे अमानवीयता को बढ़ावा मिलकर मानवीयता का ह्रास हो रहा है। यह प्रवृति काफी रफ़्तार (गती) के साथ आगे बढ़ रही है। उत्तर आधुनिकतावादी विद्वान् प्राचीन काल से लेकर आज तक के ज्ञानों और विज्ञानों को खंड-खंड करके विश्लेषण कर रहे है। जिसे हिंदी उपन्यासकारों ने चित्रित किया हैं।

****

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

१) डॉ. गीता वर्मा, हिंदी उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता विमर्श, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं: २०१६ पृ.क्र. ७२
२) मनोहरश्याम जोशी, हमजाद,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्र.सं:२००८,पृ.क्र.१०७
३) डॉ. विशाल शुक्ला, हिंदी उपन्यासों में विविध विमर्श, प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं: २०१४,पृ.क्र.१२७
४) कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान,राजपाल एंड संस, नईदिल्ली, प्र.सं:२०००, पृ.क्र.७९
५) डॉ. सुरेश पवार, हिंदी उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता, गीता प्रकाशन, नई दिल्ली,प्र.सं:२०११, पृ.क्र.१८७
६) गीतांजलि श्री,हमारा शहर उस बरस,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं:२००७, पृ.क्र.८७